Analysis: A Peer Review Research Journal of Language and Human Development (JLHD)
https://www.talentpublication.info/ *Issue:2/Volume: 1/2024 ISSN:2583-9985*

योदाका नो होशी

लेखक : केंजी मियाज़ावा

Translator: Kumar Surya Prakash
Department of Foreign Languages (Old CHC Building)
Faculty of Arts, Banaras Hindu University
Varanasi, Uttar Pradesh, 221005
Email: ksprakash.fl@bhu.ac.in

The following is a Hindi translation of a story titled Yodaka no Hoshi (Nighthawk Star), written by the famous Japanese author Kenji Miyazawa

A brief introduction of the author

Kenji Miyazawa: Born on August 27, 1896, in a town called Hanamaki, in Iwate Prefecture, Japan; Kenji was a poet, an author, a social activist, a devoted Buddhist, a strong supporter of vegetarianism, a teacher and a cellist. His works received their due attention only posthumously, and he is well known as an author of children's literature. His well-known stories include Ginga Tetsudō no Yoru, Gusukō Budori no Denki, Kaze no Matasaburō, Sero Hiki no Gōshu, Taneyamagahara no Yoru, Bijiterian Taisai, and Ryū to Shijin, etc. He also wrote poems and his collection of poems "Haru to Shura" is particularly noteworthy. Eiketsu no Asa, the poem that he wrote when his sister died, attracts interest as well. He died at the age of 37, and in the last years of his life, he was struggling with pneumonia, but this did not dampen either his will to work with the agricultural community or his flair to write. In recent years, there has been a revived interest in the works of Kenji, and more young people in Japan and elsewhere in the world are being attracted to his works.

नाईटहॉक तारा

नाईटहॉक एक बहुत ही कुरूप पक्षी होता है। उसके चेहरे पर जगह–जगह ऐसे धब्बे होते हैं, मानो जैसे मिसो [1] लगा हो; और उसकी चोंच एकदम सपाट होती है, जिसका फैलाव कान तक पहुँचता है। उसके पैर बहुत ही कमज़ोर तथा अस्थिर–से लगते हैं, मानो जैसे पाँच कदम भी न चल पाए। स्थिति

[1] मिसो : सोयाबीन से बनाया जाने वाला जापान का एक खाद्य पदार्थ ।

यह होती थी, कि दूसरे पक्षी उसका चेहरा भी नहीं देखना चाहते थे।

अब, होने को तो चातक पक्षी भी अधिक सुन्दर नहीं होता, लेकिन खुद को वह नाईटहॉक से बहुत सुन्दर मानता था, और शाम में यदि नाईटहॉक दिख जाए, तो वह बहुत खिन्न होकर आँखें मूँद लेता और गर्दन दूसरी ओर फेर लेता था। नाईटहॉक से आकार में छोटे पक्षी भी उसके सामने ही उसकी बुराई करते और कहते, "ये लो! फिर आ गया ये! देखो तो! कैसा कुरूप दिखता है ये! सच में पक्षियों के नाम पर कलंक है ये! अरे! देखो तो इसकी चोंच कितनी चौड़ी है! अवश्य ही मेंढक से मिलती–जुलती किसी प्रजाति का होगा!"

तो यह है मिलाजुला कर पूरी - की - पूरी स्थिति। अगर यह नाईटहॉक न होकर हॉक (बाज़) होता, तो इसका नाम सुनते ही इन अहंकारी पक्षियों का रंग उड़ जाता, और यह अहंकारी पक्षी थर – थर काँपते हुए, पेड़ों के पत्तों के पीछे दुबक जाते। परन्तु वह बाज़ की प्रजाति का नहीं था। इसके उलट, वह तो उन सुन्दर पक्षियों; जैसे कि किंगफ़िशर और पक्षियों में रत्न कही जाने वाली हमिंग बर्ड का बड़ा भाई था। जहाँ हमिंग बर्ड फूलों का रस पीकर जीवित रहती है, और किंगफ़िशर मछलियाँ खाकर, वहीं नाईटहॉक छोटी मक्खियाँ और कीट–पतंग इत्यादि खाकर जीवित रहता था। साथ - ही - साथ नाईटहॉक की चोंच और पंजे भी पैने नहीं होते, जिस कारण कमज़ोर - से - कमज़ोर पक्षियों को भी उससे डरने की आवश्यकता नहीं होती।

अगर ऐसा है तो उसके नाम में हॉक (बाज़) जुड़ा होना थोड़ा आश्चर्यजनक-सा तो है, परन्तु यहाँ दो बातें याद रखना ज़रूरी है। पहला यह, कि उसके पंख बहुत शक्तिशाली होते हैं, और जब वह हवा को काटते हुए उड़ान भरता है, तब एकदम बाज़ जैसा दिखता है। और दूसरा यह कि उसकी ध्वनि बहुत तीक्ष्ण है, और बाज़ से मिलती–जुलती है। स्वाभाविक रूप से, बाज़ को यह बात अच्छी नहीं लगती थी। और इसी कारण वह जब भी नाईटहॉक को देखता, तो उसे नाम बदलने के लिए धमकाता रहता था।

अंततः, एक दिन बाज़ नाईटहॉक के घर आया। "ओए! किधर छिपा बैठा है? नाम बदला नहीं तूने अभी तक! बिलकुल बेशर्म किस्म का ही है तू! मुझ में और तुझ में बहुत अंतर है। ये बात तेरे समझ में क्यों नहीं आती? मैं इस नील गगन में दूर तक उड़ सकता हूँ। मगर तू तब तक ऐसा नहीं कर सकता, जब तक कि आकाश में बादल ना हों या फिर रात न हो। और फिर मेरी चोंच और पंजों को ही देख ले, और एक बार अपनी चोंच और पंजों से मिला ले। बात साफ़ हो जाएगी।"

"लेकिन बाज़ महोदय! मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ !"

"क्यों नहीं कर सकता? मैं तुझे एक अच्छा नाम सुझाता हूँ। तू अपना नाम इचीज़ो रख ले। इचीज़ो। हाँ, अच्छा नाम है। और केवल नाम बदल भर लेने से नहीं होगा। तुझे इसकी घोषणा करनी होगी। ठीक है? अपना नया नाम लिखकर गर्दन में टांगना होगा, और सब के घर–घर जाकर बताना होगा कि अब से तुझे इचीज़ो ही बुलाएँ।"

"मगर मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ !"

"तुझे ऐसा करना ही होगा। अगर परसों सुबह तक तूने ऐसा नहीं किया, तो मैं तुझे ज़िंदा नहीं रहने दूँगा। याद रखना। मैं परसों सुबह एक – एक कर के सभी पक्षियों के घर जाऊँगा, और पूछूँगा, कि तू आया था या नहीं। अगर तुझसे एक भी घर छूट गया, तो तेरी खैर नहीं।"

"नहीं , मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ ! ऐसा करने से तो अच्छा यह है कि मैं अभी ही मर जाऊँ। आप मुझे अभी ही मार दीजिए।"

"देखो, ऐसा करो, तुम अच्छे से सोच लो। इचीज़ो कोई बुरा नाम नहीं है।" ऐसा कहकर बाज़ ने अपने विशाल पंख फैलाए, और अपने घोंसले की ओर उड़ चला।

नाईटहॉक ने अपनी आँखें मूँद लीं, और कुछ सोचने लगा।

(आखिर दूसरे मुझसे इस प्रकार घृणा क्यों करते हैं? शायद इसलिए क्योंकि मेरा चेहरा कुरूप है। क्योंकि अगर देखा जाए, तो आजतक मैंने कोई बुरा कार्य तो किया नहीं। एक बार जब मेजिरो[2] पक्षी का बच्चा घोंसले से गिर गया था, तो मैंने ही उसकी रक्षा की थी, और उसे उसके घोंसले तक पहुँचाया था। परन्तु उस समय भी, उसकी माँ ने इस प्रकार अपने बच्चे को मुझसे लिया, मानो किसी चोर के हाथों से छीन रही हो। और फिर मेरी हँसी भी उड़ाई थी शायद। और अब इस बार ये इचीज़ो लिखकर गर्दन में टाँगने की बात! बड़ी मुसीबत है।)

शाम ढल रही थी। नाईटहॉक अपने घोंसले से उड़ चला। बादलों की मंशा भी कुछ ठीक नहीं लग रही थी। नाईटहॉक इतनी ऊँचाई पर उड़ रहा था, मानो

[2] जापान तथा दुसरे पुर्व-एशियाई देशों तथा दक्षिण –पुर्वी एशिया के देशों में पाया जाने वाला एक पक्षी। Japanese white-eye (Zosterops japonicus)

बादलों का स्पर्श कर रहा हो। बिलकुल शांत – वह आसमान में उड़ रहा था।

फिर अचानक उसने अपनी चोंच खोली, और अपने पंखों को पूरी तरह फैलाकर, तीर की तरह आसमान के एक छोर से भूमि की ओर उड़ान भरी। बहुत से छोटे – छोटे कीट – पतंगों को उसने अपना आहार बनाया।

इससे पहले की वह भूमि तक पहुँचता, उसने फिर आकाश की ओर उड़ान भर दी। बादलों ने धुँधला रंग ले लिया था, और सामने का पहाड़ आग की लालिमा लिए हुए था।

नाईटहॉक जब इस तरह अपने पंखों को पूरा विस्तार देकर तीर की तरह उड़ता था, तो ऐसा लगता था मानो उसने आकाश को दो भागों में काट दिया हो। तभी एक काबुतोमुशी[3] नाईटहॉक की कंठ में चली गई, और छटपटाने लगी। नाईटहॉक ने तुरंत उसे निगल लिया, पर उस समय पता नहीं क्यों उसे एक सिहरन सी महसूस हुई।

बादल अब बिलकुल काले हो चुके थे, और पूर्व की ओर के पहाड़ की तरफ जो अग्नि की लालिमा दिख रही थी, वह अब भयावह दिखने लगी थी। नाईटहॉक के सीने में घुटन-सी हो रही थी, पर वह दोबारा आकाश की ओर उड़ा।

फिर एक काबुतोमुशी नाईटहॉक की कंठ में चली गई। इस बार भी काबुतोमुशी बहुत छटपटाई, जिससे नाईटहॉक का कंठ छिल गया। नाईटहॉक ने किसी तरह उसे निगला, लेकिन इसके बाद उसे असहज-सा लगने लगा, और उसने एक तीक्ष्ण चीत्कार भरा। चीत्कार भरते हुए वह आसमान में गोल – गोल चक्कर काटने लगा।

> *(ओह! हर दिन काबुतोमुशी तथा अन्य दूसरे कीट–पतंग मेरे कारण अपना जीवन खो देते हैं। और इस बार बाज़ के कारण मेरे प्राण जाएँगे। कितना निर्मम है! असहनीय ! अब से इन कीट–पतंगों को खाने से श्रेयस्कर होगा निराहार रहकर मृत्यु को प्राप्त करना। या शायद उससे पहले कि बाज़ आकर मुझे मार दे। क्यों न मैं ही इस नील गगन के उस पार चला जाऊँ।)*

पहाड़ की वह भयावह लालिमा अब अपने पंखों को फैलाकर बादलों को भी स्पर्श कर चुकी थी।

नाईटहॉक सीधे अपने छोटे भाई किंगफ़िशर के घर पहुँचा। किंगफ़िशर भी बस उठा ही था, और दूर पहाड़ी में धधकते हुए आग को देख रहा था।

[3] जापान में पाया जाने वाला एक प्रकार का कीट। Japanese rhinoceros beetle. यह कीट वर्मपंखी गण जाती के कीटों जैसा होता है और अपने पंखों के ऊपर पाए जाने वाले मोटे चमड़े जैसे आवरण के लिए जाना जाता है।

नाईटहॉक को आता देख, उसने नाईटहॉक का अभिवादन किया।

“बड़े भैया नमस्ते। कैसे आना हुआ? कोई आवश्यक कार्य है क्या?”

“नहीं कोई आवश्यक कार्य तो नहीं है। बस ये बात थी कि मैं बहुत दूर जाने वाला हूँ। और मैंने सोचा कि जाने से पहले एक बार तुमसे मिलता हुआ जाऊँ।”

“यह क्या बात हुई बड़े भैया! बहन हमिंग बर्ड भी इतनी दूर रहती है। आप भी दूर चले जाएंगे तो मैं यहाँ अकेला पड़ जाऊँगा। आप मत जाइए।”

“नहीं मेरे भाई। इस बार मेरे पास और कोई चारा नहीं है। आज मुझे जाने से मत रोको। और अब से तुम भी मछलियाँ पकड़ कर तभी खाना, जब खाना बहुत ज़रूरी हो। अगर ज़्यादा भूख न लगी हो, तो किसी बेचारी मछली को मारने से बचने का प्रयास करना। चलो मैं अब चलता हूँ।”

“अरे! बड़े भैया! पर आपको अचानक हुआ क्या है? कुछ देर तो ठहरिये।”

“नहीं मेरे भाई, मैं कितनी देर भी क्यों न रुक जाऊँ, बात वही होगी। हमिंग बर्ड को मेरा प्यार देना। मैं अब चलता हूँ। अब दोबारा हमारी भेंट नहीं हो पाएगी।”

नाईटहॉक रोते हुए अपने घर चला आया। गर्मी की रात तो छोटी होती ही है। जल्दी ही सुबह होने वाली थी।

फ़र्न के पत्ते सुबह के कोहरे को खुद में समेटे हलके – हलके हिल रहे थे। नाईटहॉक ने एक तीक्ष्ण चीत्कार भरा। फिर अपने घोंसले को सुव्यवस्थित कर अपने पंखों को सँवारा। और फिर उड़ चला।

कोहरा अब छट चुका था, और सूर्योदय भी हो चुका था। नाईटहॉक अपनी उड़ान के संतुलन को किसी प्रकार बनाए हुए, चमकते हुए सूरज की ओर प्रत्यंचा से छूटे एक तीर की भाँति उड़ता हुआ गया।

“हे सूर्य! मुझे अपने लोक में स्थान दें। आपकी ऊष्मा यदि मुझे भस्म भी कर दे तो मैं इसे अपना सौभाग्य ही समझूँगा। मेरा यह कुरूप शरीर भी, जलते समय एक छोटा-सा ही सही, परन्तु प्रकाश अवश्य देगा। मुझे अपने शरण में लेने की कृपा करें।”

ऐसा कहते हुए नाईटहॉक सूर्य की ओर बढ़ता चला गया। मगर बहुत देर तक उड़ते रहने के पश्चात भी, सूर्य अब भी उससे बहुत दूर था। ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो वह जितना सूर्य के निकट पहुँच रहा था, सूर्य उतना ही और दूर होता चला जा रहा था, और पहले से अधिक छोटा दिखने लगा था।

तभी सूर्य ने कहा "तुम नाईटहॉक हो न। तुमने बहुत कठिनाइयों को सहन किया है। तुम अपनी बात जाकर तारे से कहो। तुम दिन के पक्षी नहीं हो, अन्यथा मैं तुम्हारी सहायता अवश्य करता।"

नाईटहॉक ज्यों-ही सूरज के अभिवादन में झुका, वह अचानक धरती की ओर गिरने लगा, और अंततः घास के ऊपर गिर गया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ, मानो वह कोई स्वप्न देख रहा हो। उसे ऐसा जान पड़ रहा था, जैसे उसका शरीर हवा में उड़ते हुए अनगिनत तारों के बीच पहुँच गया हो। तभी उसे ऐसा आभास हुआ , जैसे बाज़ ने आकर उसे दबोच लिया हो।

तभी अचानक, कोई ठंडी चीज़ उसके चेहरे पर गिरी, और नाईटहॉक ने अपनी आँखें खोलीं। जापानी पैंप घास से ओस की बूँद उसपर गिरी थी। रात हो चुकी थी, और आकाश में तारे जगमगा रहे थे। नाईटहॉक आकाश की ओर उड़ चला। वह पहाड़ आज भी अग्नि से दहक रहा था। नाईटहॉक उस अग्नि की मद्धिम रौशनी, और तारों के शीतल प्रकाश के बीच आसमान के चक्कर लगा रहा था। फिर एक चक्कर लगाकर अपनी पूरी शक्ति से पश्चिम की ओर सुशोभित कालपुरुष (ओरायन) तारामंडल की ओर उड़ चला, और उससे भी वही कहा, जो सूर्य से कहा था।

"मुझे अपनी शरण में ले लें। आपके निकट आने से यदि मैं जल कर मर भी जाऊँ, तो भी मुझे कोई दुःख नहीं होगा।"

ओरायन एक वीरता का गीत गा रहा था, और उसने नाईटहॉक को अनदेखा कर दिया। नाईटहॉक रूआँसा-सा हो गया, और थोड़ा लड़खड़ाया। उसने अपने आप को सँभाला, और आसमान का एक और चक्कर लगाया। इस बार वह दक्षिण दिशा के महाश्वान (कैनिस मेजर) तारामंडल की तरफ़ उड़ता हुआ गया, और कहा, "मुझे अपनी शरण में ले लें। आपके निकट आने से यदि मैं जल कर मर भी जाऊँ, तो भी मुझे कोई दुःख नहीं होगा।" तारे ने टिमटिमाते हुए कहा, "बेवकूफों वाली बात मत करो! तुम हो क्या चीज़? बस एक छोटे से पक्षी। तुम्हें यहाँ तक उड़कर आने में करोड़ों–अरबों वर्ष लगेंगे।" ऐसा कहकर उसने अपना मूँह फेर लिया।

नाईटहॉक बहुत हताश हुआ, और फिर से लड़खड़ाया। उसने फिर एक बार अपने आप को सँभाला, और आसमान के दो चक्कर लगाए। इस बार वह पूरी शक्ति से उत्तर दिशा के सप्तर्षि तारामंडल की ओर बढ़ा, और कहा "मुझे अपनी शरण में ले लें। आपके निकट आने से यदि मैं जल कर मर भी जाऊँ, तो भी मुझे कोई दुःख नहीं होगा।"

सप्तर्षि ने ठहरे हुए स्वर में कहा, "बेकार की बात मत सोचो। जाओ और जाकर अपना दिमाग थोड़ा ठंडा करो। इसके लिए बर्फीले समुद्री पानी में अपना सर डुबो लो, और यदि आस पास समुद्र न हो तो एक कटोरे में बर्फ और पानी लो और उसमें अपना सर डुबाओ।"

नाईटहॉक बहुत मायूस हुआ, और फिर से लड़खड़ाया। उसने फिर एक बार अपने आप को सँभाला, और आसमान के चार चक्कर लगाए। इस बार वह पूर्व की ओर आकाशगंगा के दूसरे छोर पर टिमटिमाते हुए गरुड़ तारामंडल की ओर गया, और कहा, "पूर्व के श्वेत गरुड़! मुझे अपनी शरण में ले लें। आपके निकट आने से यदि मैं जल कर मर भी जाऊँ, तो भी मुझे कोई दुःख नहीं होगा।" गरुड़ ने उत्तर दिया "अरे! यह भी कोई बात हुई! तारा बनना है! यूँ ही कोई भी तारा नहीं बन सकता। इसके लिए उसके अनुरूप प्रतिष्ठा, और बहुत सारे पैसों की आवश्यकता होती है।

अब नाईटहॉक पूरी तरह थक चुका था। उसने अपने पंख मोड़ लिए, और धरती की ओर गिरने लगा। उसके वे कमज़ोर पैर धरती को छूने ही वाले थे, कि तभी वह एक तीर की भाँति आसमान की ओर उड़ा। कुछ देर बाद उसने अपने शरीर को झकझोरा, और उसके शरीर के पंख काँटे की तरह खड़े हो गए। ठीक उसी तरह जिस तरह कि किसी ईगल के होते हैं, जब वह एक भालू पर आक्रमण करता है।

फिर उसने एक तीक्ष्ण चीत्कार भरा जो बिल्कुल बाज़ की तरह था। इस आवाज़ से सभी पक्षियों की नींद खुल गई, और वह थर – थर काँपते हुए, तारों से टिमटिमाते आकाश की ओर संशय के साथ देखने लगे।

नाईटहॉक सीधे आकाश की ओर उड़ने लगा। वह जलता हुआ पहाड़ अब किसी बुझते हुए कोयले की लौ से ज्यादा बड़ा नहीं लग रहा था। नाईटहॉक उड़ता चला गया। ऊँचाई में तापमान कम होने के कारण उसकी साँसें भी बर्फ की तरह फेफड़ों में जम गई थीं, और ऊँचाई में उसे पंख भी ज्यादा शक्ति से फड़फड़ाने पड़ रहे थे।

मगर तारे तो अब भी उतने ही दूर लग रहे थे। साँसें भी बहुत तेज़ हो गई थीं, मानो फेफड़े न हो धौंकनी हो। ठण्ड और पाला उसे एक तलवार की तरह काट रहे थे। उसके पंख सुन्न पड़ गए थे। आँसू से भरी आँखों को उठाकर उसने एक बार फिर आकाश की तरफ देखा। हाँ। यही है नाईटहॉक का अंत। उसे नहीं पता था कि वह उड़ रहा है या गिर रहा है, उल्टा है या सीधा है। उसका मन शांत था। उसकी चोंच यूँ तो खून से लथपथ थी, मगर थोड़ी खुली हुई थी, और ऐसा लग रहा था जैसे वो हँस रहा हो।

थोड़ी देर बाद उसने अपनी आँखें पूरी तरह खोलीं। उसने देखा की उसका शरीर जलते फॉस्फोरस की तरह, एक सुन्दर, शांत, नीली अग्नि का स्वरूप ले चुका है। उसने देखा कि उसके ठीक बगल में शर्मिष्ठा (कैसिओपिया) तारामंडल है, और उसके ठीक पीछे आकाशगंगा की सुन्दर मद्धिम रौशनी। तब से लेकर आज तक नाईटहॉक प्रकाश देता चला आ रहा है।